॥ श्री चिंतामणी पार्श्वनाथाय नमः ॥ ॥ श्री शांतिनाथाय नमः ॥

॥ श्री वज्रस्वामिने नमः॥

कलापूर्णोऽस्तु मंगलम्

सूत्र कंठस्थ कला

भाग- १

अध्यात्मयोगी प.पू.आ.दे. श्रीमद्विजय कलापूर्णसूरीश्वरजी
महाराजाकी जन्म शताब्दी वर्ष

(दो प्रति० सूत्रोंको याद रखनेंकी जादूई
"कडी-जोडाण" पद्धति)

संकलनकार :
श्री महेसाणा जैन पाठशालाके प्राध्यापक
पंडितवर्य श्री प्रकाशभाई घोडा
मो. 750-660-9070

प्रेरक :

प.पू.आ.भ. श्रीमद्विजय तत्त्वदर्शनसूरीश्वरजी म.सा.

SOOTRA KANTHASTH KALA
Navbharat Sahitya Mandir
AHMEDABAD, 2025

प्रथम संस्करण : २०२५

५०० नकल

विचारबीज
Digital Jain Pathshala
Mumbai Mo. 79002-99002

Know More

₹ 50/-

प्रकाशक
महेन्द्र पी. शाह
नवभारत साहित्य मंदिर
जैन देरासरके पास, गांधी रोड, अहमदाबाद-३८०००१
फोन : (०७९) २२१३९२५३, २२१३२९२१
E-mail : info@navbharatonline.com, Web : www.navbharatonline.com
fb.com/NavbharatSahityaMandir

प्राप्तिस्थान (कृपया WhatsApp भेजे)

१) कीर्ति मुरजी रांभिया (मनफरावाले)
A1 Collection LLP, GF-11, IndraPrastha, S.V. Road,
Borivali (W), Op. Jamli Gali, Mumbai-400092

२) श्री कलापूर्णसूरि आराधना भवन
पार्थ फ्लेटके पास, रेडक्रोस सोसायटीके सामने,
सुविधा शोपिंग सेन्टरके पीछे, पालडी, अहमदाबाद (W) 98244-72901

सूत्रकी प्रत्येक कडीका क्रमवार, कमसे कम ४०-५० बार ऊँची आवाजसे रटना जरुरी है।

यह पुस्तिका श्रावक द्रव्यसे तैयार हुई है।

सूत्रप्रेमी श्रावक/श्राविका,

पंडित प्रकाश घोडाका प्रणाम।

श्री जैन सोसा. जैन संघ, अहमदाबाद मंडण श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ दादा और पूज्यपाद उपाध्याय भगवंत श्री विमलसेन विजयजी महाराजाकी अपार कृपा और प्रेरणा प्राप्त हुइ और दो प्रति. सूत्रोका "कडी-जोडाण" पद्धति युक्त संकलन कार्य पुस्तकके रूपमें प्रगट हुआ।

यहां संकलित सूत्रोंकी "जादूई कडी-जोडाण" पद्धति पुरानी है। संकलनकी इस पद्धतिसे **सूत्र कंठस्थ** होनेके बाद सूत्र स्थायी रूपसे याद रह जाते हैं।

यह विशेष रूपसे उल्लेखनीय है कि,

- पंडितवर्यश्रीसे विनम्र निवेदन है कि इस "कडी-जोडाण" विधिसे गाथा/सूत्र आसानीसे याद किये जा सकते हैं, इसलिए कृपया आपश्रीकी पाठशालामें सभीको यह पुस्तिकासे पढाये।

[यह संकलन जयवंता श्री जिनशासनका है और जिनशासनके लिए है।]

www.sootrakanthasth.com

कडी-जोडाण पद्धतिसे
सूत्र/गाथा कैसे कंठस्थ करें?

"लोगस्स"की प्रथम गाथा कैसे कंठस्थ करें? वह समजना है।

* सबसे पहले "लोगस्स"की प्रथम-गाथाके प्रथम-पद "लोगस्स उज्जोअगरे"को अपने क्षयोपशम मुताबिक ३०-४०-५० बार कंठस्थ करना है। उसके बाद...

* दूसरी-कडीमें "लोगस्स"की प्रथम-गाथाका प्रथम-पदको दूसरे-पदके आगे रखके दूसरी-कडी को कंठस्थ करना है।

  "लोगस्स उज्जोअगरे + धम्मतित्थयरे जिणे"को अपने क्षयोपशमके मुताबिक ३०-४०-५० बार कंठस्थ करना है। उसके बाद

* तीसरी कडीमें "लोगस्स"की प्रथम-गाथाके दूसरे-पदको तीसरे पदके आगे रखकर तीसरी-कडी कंठस्थ करना है।

  "धम्मतित्थयरे जिणे + अरिहंते कित्तइस्सं"को अपने क्षयोपशमके मुताबिक ३०-४०-५० बार कंठस्थ करना है। उसके बाद

* चोथी-कडीमें "लोगस्स"की प्रथम-गाथाके तीसरे-पदको चोथे पदके आगे रखकर चोथी-कडी कंठस्थ करना है।

  "अरिहंते कित्तइस्सं + चउवीसंपि केवली"को अपने क्षयोपशमके मुताबिक ३०-४०-५० बार कंठस्थ करना है।

इस तरह "पुराना पद + नया पद" बारबार ऊँची आवाजसे रटकर कडीजोडाण पद्धतिसे गाथा हमेशा याद रह जायेगी। इस पद्धतिसे अन्य गाथा और दूसरे सूत्रोको सरलतासे कंठस्थ करना है।

गाथा कंठस्थ करनेके लिए कडीजोडाण
पद्धति जादूई चिराग है।

१. कडी-जोडाण पद्धति क्या है?

सूत्र कंठस्थ करनेकी जादुई कला है।

२. कडी-जोडाण पद्धतिमे एक गाथाको चार या ज्यादा विभागमे विभाजीत कीया गया है। हर कडीके अंतिम शब्दको अब आनेवाली नइ कडीके आगे रक्खा गया है। परिणाम स्वरुप एकके बाद दूसरी कडी कंठस्थ बोलनेमें सुगमता रहती है।

३. हर कडीको कमसे कम ३०-४० बार ऊंची आवाजसे रटना आवश्यक है। कडी-जोडाण शब्दसे एकसे दूसरी कडीका अनुसंधान दिमागमें अच्छेसे याद रहता है।

४. सामान्य पद्धतिके मुकाबले "कडी-जोडाण" पद्धतिसे कंठस्थ कीया हुआ सूत्र दीर्घकाल तक याद रहता है।

५. यह पुस्तिका केवल सूत्र/गाथाओंको याद करनेके लिए है। सूत्र/गाथाएँ लेने-देनेके लिए हमेशा पूज्य साधु/साध्वी भगवंत या पंडितजी/पाठशालाके धार्मिक शिक्षिकासे लेना चाहिए।

६. संदेह : सूत्र/गाथाका पाठ करते समय "कडी-जोडाण"को दोबारा दोहराना, सूत्र/गाथाका पाठ दो-दो बार किया जाएगा या नहीं?

"कडी-जोडाण" शब्दका मुख्य उद्देश्य हमारे दिमागमें अगली-पीछली कडीका जोडाणको स्थायी रूपसे याद रखनेमें मदद करना है।

जिसने "कडी-जोडाण" विधि द्वारा सही ढंगसे सूत्र मुखपाठ किया है, उनका अनुभव है कि सूत्र पढ़ते समय एक शब्दभी दोहराया (रीपीट) नहीं जाता।

अनुक्रम

१. श्री नमस्कार महामंत्र १

२. श्री पंचिंदिय सूत्र (गुरुस्थापना सूत्र) १

३. श्री खमासमण (पंचांग प्रणिपात) सूत्र २

४. श्री इच्छकार सूत्र (गुरुनिमंत्रण सूत्र) २

५. श्री अब्भुट्ठिओ सूत्र (गुरुक्षमापना सूत्र) ३

६. श्री इरियावहियं (लघु प्रतिक्रमण) सूत्र ४

७. श्री तस्स उत्तरी करणेणं सूत्र ५

८. श्री अन्नत्थ (आगार) सूत्र ६

९. श्री लोगस्स (नामस्तव) सूत्र ७

१०. श्री करेमि भंते (सामियक का पच्चक्खाण) सूत्र ९

११. श्री सामियक पारने का सूत्र १०

१२. श्री जगचिंतामणि (चैत्यवंदन) सूत्र ११

१३. श्री जं किंचि सूत्र १३

१४. श्री नमुत्थुणं (शक्रस्तव) सूत्र १३

१५. श्री जावंति चेइआइं सूत्र १५

१६. श्री जावंत के वि साहू सूत्र १५

१७. श्री पंच परमेष्ठि नमस्कार सूत्र १५

१८. श्री उवसग्गहरं (उपसर्गहर) सूत्र १६

१९. श्री जयवीयराय (प्रार्थना) सूत्र १७
२०. श्री अरिहंत चेइयाणं (चैत्य-स्तव) सूत्र १८
२१. श्री कल्लाण-कंदं (पांच जिनकी थोय) १९
२२. श्री संसारदावा स्तुति २०
२३. श्री पुक्खरवरदी (श्रुतस्तव) सूत्र २१
२४. श्री सिद्धाणं-बुद्धाणं (सिद्धस्तव) २३
२५. श्री वेयावच्चगराणं सूत्र. २४
२६. श्री भगवानादि वंदन सूत्र २४
२७. श्री देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं (प्रतिक्रमणबीजक) सूत्र . . . २४
२८. श्री इच्छामि ठामि सूत्र २५
२९. श्री पांच आचारकी गाथा (पंचाचार सूत्र) २६
३०. श्री सुगुरु वांदणा (द्वादशावर्त्तवंदन) सूत्र २८
३१. श्री देवसिअं आलोउं सूत्र २९
३२. श्री सात लाख (चोरासी लाख जीवयोनिसे माफी मांगनेका) सूत्र २९
३३. श्री अढार पापस्थानक सूत्र ३०
३४. श्री सव्वस्सवि (प्रतिक्रमण बीजक) सूत्र ३१
३५. श्री इच्छामि पडिक्कमिउं सूत्र ३१
३६. श्री वंदित्तु (श्रावक प्रतिक्रमण) सूत्र. ३२
३७. श्री आयरिय उवज्झाए सूत्र ४५
३८. श्री नमोऽस्तु वर्द्धमानाय (सायं वीरस्तुति) सूत्र ४६

३९. श्री विशाललोचन (प्रभातिक वीर स्तुति) सूत्र ४७
४०. श्री श्रुतदेवताकी स्तुति. ४८
४१. श्री क्षेत्रदेवताकी स्तुति ४८
४२. श्री श्रुतदेवताकी स्तुति. ४८
४३. श्री भवनदेवताकी स्तुति ४९
४४. श्री क्षेत्रदेवताकी स्तुति ४९
४५. श्री अड्ढाइज्जेसु (मुनिवंदन) सूत्र ४९
४६. श्री वरकनक (१७० जिन स्तुति) सूत्र ५०
४७. श्री लघुशान्ति स्तव ५०
४८. श्री चउक्कसाय चैत्यवंदन ५५
४९. श्री भरहेसरकी सज्झाय ५६
५०. श्री मन्नह जिणाणं सूत्र ५९
५१. श्री सकलतीर्थ (तीर्थ वंदना) सूत्र ६०

"सूत्र कंठस्थ कला" भाग-२
पक्खी प्रतिक्रमण सूत्रोको मुखपाठ करनेके लिए उपलब्ध है।

१. श्री नमस्कार महामंत्र

(श्री पंचमंगल महाश्रुतस्कंध सूत्र)

नमो अरिहंताणं	॥१॥
नमो सिद्धाणं	॥२॥
नमो आयरियाणं	॥३॥
नमो उवज्झायाणं	॥४॥
नमो लोअे सव्व-साहूणं	॥५॥
एसो पंच-नमुक्कारो	॥६॥
सव्व-पाव-प्पणासणो	॥७॥
मंगलाणं च सव्वेसिं	॥८॥
पढमं हवइ मंगलं	॥९॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

प्रत्येक कडीको ऊँची आवाजसे अपने क्षयोपशम मुताबिक ३०-४०-५० बार रटना जरुरी है।

२. श्री पंचिंदिय सूत्र (गुरुस्थापना सूत्र)

१		पंचिंदिय-संवरणो,
२	पंचिंदिय-संवरणो,	तह नवविह-बंभचेर गुत्ति-धरो ।
३	तह नवविह-बंभचेर गुत्ति-धरो;	चउविह-कसाय-मुक्को,
४	चउविह-कसाय-मुक्को,	इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
५ इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो.	पंच-महव्वय-जुत्तो,
६ पंच-महव्वय-जुत्तो,	पंच-विहायार पालण-समत्थो ।
७ पंच-विहायार पालण-समत्थो ।	पंच-समिओ ति-गुत्तो,
८ पंच-समिओ ति-गुत्तो,	छत्तीस-गुणो गुरु मज्झ ॥ २॥

आद्याक्षर (पं, पं)

३. श्री खमासमण (पंचांग प्रणिपात) सूत्र

१	इच्छामि खमासमणो! वंदिउं,
२ इच्छामि खमासमणो! वंदिउं,	जावणिज्जाए निसीहिआए,
३ जावणिज्जाए निसीहिआए,	मत्थएण वंदामि ॥ १॥

४. श्री इच्छकार सूत्र (गुरुनिमंत्रण सूत्र)

१	इच्छकार सुह-राइ? (सुह-देवसि)?
२ इच्छकार सुह-राइ? (सुह-देवसि)?	सुख-तप? शरीर-निराबाध?
३ सुख-तप? शरीर-निराबाध?	सुख-संजम-जात्रा निर्वहो छो जी?
४ सुख-संजम-जात्रा निर्वहो छो जी?	स्वामी! शाता छे जी?
५ स्वामी! शाता छे जी?	भात-पाणीनो लाभ देजो जी ॥ १॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

५. श्री अब्भुट्ठिओ सूत्र (गुरुक्षमापना सूत्र)

१		इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!
२	इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!	अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर-
३	अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर-	राइअं (देवसिअं) खामेउं?

अब् + भुट् + ठिओमि

४	राइअं (देवसिअं) खामेउं?	इच्छं, खामेमि राइअं (देवसिअं) ।
५	इच्छं, खामेमि राइअं (देवसिअं) ।	जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं,
६	जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं,	भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे,
७	भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे,	आलावे, संलावे,
८	आलावे, संलावे,	उच्चासणे, समासणे,
९	उच्चासणे, समासणे,	अंतर-भासाए, उवरि-भासाए ।
१०	अंतर-भासाए, उवरि-भासाए ।	जं किंचि, मज्झ विणय-परिहीणं,
११	जं किंचि, मज्झ विणय-परिहीणं,	सुहुमं वा बायरं वा
१२	सुहुमं वा बायरं वा	तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि,
१३	तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि,	तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

यहाँ सूत्रकी हर कडीको 'कडी-जोडाण' पद्धतिसे संकलन किया गया है। इसलिए हर कडीको उंची आवाजमें कमसे कम ४०-५० बार रटना जरुरी है।

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

६. श्री इरियावहियं (लघु प्रतिक्रमण) सूत्र

१		इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!
२	इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!	इरियावहियं पडिक्कमामि?
३	इरियावहियं पडिक्कमामि?	इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं । ॥१॥
४	इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं ।	इरियावहियाए, विराहणाए । ॥२॥
५	इरियावहियाए, विराहणाए ।	गमणागमणे । ॥३॥
६	गमणागमणे ।	पाण-क्कमणे, बीय-क्कमणे, हरिय-क्कमणे
७	पाण-क्कमणे, बीय-क्कमणे, हरिय-क्कमणे	ओसा-उत्तिंग-पणग-दग
८	ओसा-उत्तिंग-पणग-दग	मट्टी मक्कडा-संताणा संकमणे। ॥४॥
९	मट्टी मक्कडा-संताणा संकमणे ।	जे मे जीवा विराहिया । ॥५॥
१०	जे मे जीवा विराहिया ।	एगिंदिया, बेइंदिया,
११	एगिंदिया, बेइंदिया,	तेइंदिया, चउरिंदिया,
१२	तेइंदिया, चउरिंदिया,	पंचिंदिया । ॥६॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१३ पंचिंदिया ।	अभिहया, वत्तिया, लेसिया,
१४ अभिहया, वत्तिया, लेसिया,	संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,
१५ संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,	किलामिया, उद्दविया,
१६ किलामिया, उद्दविया,	ठाणाओ ठाणं संकामिया,
१७ ठाणाओ ठाणं संकामिया,	जीवियाओ ववरोविया,
१८ जीवियाओ ववरोविया,	तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ॥७॥

आद्याक्षर (इच्छा, इरि, ग, पा, जे) (एगिं, अभि)

७. श्री तस्स उत्तरी करणेणं सूत्र

१	तस्स उत्तरी-करणेणं,
२ तस्स उत्तरी-करणेणं,	पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं,
३ पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं,	विसल्ली-करणेणं,
४ विसल्ली-करणेणं,	पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए,
५ पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए,	ठामि काउस्सग्गं ॥ ॥१॥

निग् + घायणट् + ठाए

'कडी-जोडाण' पद्धतिके मुताबिक हर कडीको "कडी-जोडाण-पद" + "मूल-गाथा-पद" दोनोको साथमें बोलना जरुरी है।

८. श्री अन्नत्थ (आगार) सूत्र

आद्याक्षर (अन्न, सु, एव, जा, ता)

१		अन्नत्थ ऊससिएणं,	
२	अन्नत्थ ऊससिएणं,	नीससिएणं, खासिएणं,	
३	नीससिएणं, खासिएणं,	छीएणं, जंभाइएणं,	
४	छीएणं, जंभाइएणं,	उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं,	
५	उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं,	भमलीए, पित्त-मुच्छाए	॥१॥
६	भमलीए, पित्त-मुच्छाए ॥	सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं,	
७	सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं,	सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं,	
८	सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं,	सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं	॥२॥
९	सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ॥	एवमाइएहिं आगारेहिं,	
१०	एवमाइएहिं आगारेहिं,	अभग्गो अविराहिओ,	
११	अभग्गो अविराहिओ,	हुज्ज मे काउस्सग्गो	॥३॥
१२	हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥	जाव अरिहंताणं भगवंताणं	
१३	जाव अरिहंताणं भगवंताणं	नमुक्कारेणं न पारेमि	॥४॥
१४	नमुक्कारेणं न पारेमि ॥	ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं,	
१५	ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं,	झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि	॥५॥

९. श्री लोगस्स (नामस्तव) सूत्र

आद्याक्षर (लो, उस, सु, कुं, एवं) (कि, चं)

१		लोगस्स उज्जोअगरे,
२	लोगस्स उज्जोअगरे,	धम्म-तित्थयरे जिणे;
३	धम्म-तित्थयरे जिणे;	अरिहंते कित्तइस्सं,
४	अरिहंते कित्तइस्सं,	चउवीसंपि केवली ॥१॥

५	चउवीसंपि केवली ॥	उसभमजिअं च वंदे,
६	उसभमजिअं च वंदे,	संभवमभिणंदणं च सुमइं च;
७	संभवमभिणंदणं च सुमइं च;	पउमप्पहं सुपासं,
८	पउमप्पहं सुपासं,	जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥

सम् + भव + मभिणन् + दणम्; पउमप् + पहम्

९	जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥	सुविहिं च पुप्फदंतं,
१०	सुविहिं च पुप्फदंतं,	सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च;
११	सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च;	विमलमणंतं च जिणं,
१२	विमलमणंतं च जिणं,	धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥

विमल + मणन् + तम्

१३	धम्मं संतिं च वंदामि ॥	कुंथुं अरं च मल्लिं,
१४	कुंथुं अरं च मल्लिं,	वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च
१५	वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च	वंदामि रिट्ठनेमिं,
१६	वंदामि रिट्ठनेमिं,	पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१७	पासं तह वद्धमाणं च ॥	एवं मए अभिथुआ,
१८	एवं मए अभिथुआ,	विहुय-रय-मला, पहीण-जर-मरणा;
१९	विहुय-रय-मला, पहीण-जर-मरणा;	चउवीसं पि जिणवरा,
२०	चउवीसं पि जिणवरा,	तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
२१	तित्थयरा मे पसीयंतु ॥	कित्तिय-वंदिय-महिया,
२२	कित्तिय-वंदिय-महिया,	जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा;
२३	जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा;	आरुग्ग-बोहिलाभं,
२४	आरुग्ग-बोहिलाभं,	समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ॥६॥
२५	समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ॥	चंदेसु निम्मलयरा,
२६	चंदेसु निम्मलयरा,	आइच्चेसु अहियं पयासयरा;
२७	आइच्चेसु अहियं पयासयरा;	सागर-वर-गंभीरा,
२८	सागर-वर-गंभीरा,	सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

"सामान्य सूचना"

जब हम 'कडी-जोडाण-पद' और 'मूल-गाथा-पद'को साथमें बारी-बारी बोल रहे हो तब, एकसे दूसरी बारके बीचमें बोलनेमें २-३ सेकन्ड जीतना समय रुकके बोलना।

१०. श्री करेमि भंते (सामायिक का पच्चक्खाण) सूत्र

१		करेमि भंते! सामाइयं,
२	करेमि भंते! सामाइयं,	सावज्जं जोगं पच्चक्खामि ।
३	सावज्जं जोगं पच्चक्खामि ।	जाव नियमं पज्जुवासामि,
४	जाव नियमं पज्जुवासामि,	दुविहं तिविहेणं,
५	दुविहं तिविहेणं,	मणेणं, वायाए, काएणं,
६	मणेणं, वायाए, काएणं,	न करेमि, न कारवेमि ।
७	न करेमि, न कारवेमि ।	तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

नम्र बिनती

सूत्रोमें typing mistake या जोडणीकी अशुद्धि आपश्रीको मालुम पडे तो, कृपया हमे निर्देश करे!

पूज्यपाद न्यायविशारद आ.भ. श्रीमद् विजय भुवनभानुसूरीश्वरजी महाराजा यह "कडी-जोडाण" पद्धतिसे सूत्र कंठस्थ करनेकी प्रेरणा करते थे।

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

११. श्री सामायिक पारने का सूत्र

१		सामाइय वय-जुत्तो,
२	सामाइय वय-जुत्तो,	जाव मणे होइ नियम-संजुत्तो;
३	जाव मणे होइ नियम-संजुत्तो;	छिन्नइ असुहं कम्मं,
४	छिन्नइ असुहं कम्मं,	सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥

५	सामाइय जत्तिया वारा ॥	सामाइअम्मि उ कए,
६	सामाइअम्मि उ कए,	समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।
७	समणो इव सावओ हवइ जम्हा ।	एएण कारणेणं,
८	एएण कारणेणं,	बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

सामाइअम् + मि

९	बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥	सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा विधि करते जो कोइ अविधि हुइ हो उन सबको मन वचन कायासे मिच्छा मि दुक्कडं ॥३॥

१०	मन वचन कायासे मिच्छा मि दुक्कडं ॥	दश मनके, दश वचनके बार कायाके इन बत्तीस दोषोमेंसे जो कोइ दोष लगा हो, जो कोई दोष लगा हो, वह सब मन वचन कायासे मिच्छा मि दुक्कडं ॥४॥

१२. श्री जगचिंतामणि (चैत्यवंदन) सूत्र

आद्याक्षर (ज, क, ज, स, प)

१		इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूं?
२	इच्छा० संदि० चैत्यवंदन करूं?	इच्छं, जग-चिंतामणि! जग-नाह!
३	इच्छं, जग-चिंतामणि! जग-नाह!	जग-गुरु, जग-रक्खण!
४	जग-गुरु, जग-रक्खण!	जग-बंधव! जग-सत्थवाह!
५	जग-बंधव! जग-सत्थवाह!	जग-भाव-विअक्खण!
६	जग-भाव-विअक्खण!	अट्ठावय-संठविअ-रूव!
७	अट्ठावय-संठविअ-रूव!	कम्मट्ठ-विणासण!
८	कम्मट्ठ-विणासण!	चउवीसंपि जिणवर!
९	चउवीसंपि जिणवर!	जयंतु अप्पडिहय-सासण! ॥१॥

१०	जयंतु अप्पडिहय-सासण!॥	कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं,
११	कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं,	पढम-संघयणि,
१२	पढम-संघयणि,	उक्कोसय सत्तरिसय,
१३	उक्कोसय सत्तरिसय,	जिणवराण विहरंत लब्भइ;
१४	जिणवराण विहरंत लब्भइ;	नव कोडिहिं केवलीण,
१५	नव कोडिहिं केवलीण,	कोडि-सहस्स नव साहू गम्मइ ।
१६	कोडि-सहस्स नव साहू गम्मइ ।	संपइ जिणवर वीस मुणि
१७	संपइ जिणवर वीस मुणि	बिहुं कोडिहिं वरनाण;

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१८ बिहुं कोडिहिं वरनाण;	समणह कोडि-सहस्स-दुअ,
१९ समणह कोडि-सहस्स-दुअ,	थुणिज्जइ निच्चविहाणि ॥२॥
२० थुणिज्जइ निच्चविहाणि ॥	जयउ सामिय! जयउ सामिय!
२१ जयउ सामिय! जयउ सामिय!	रिसह! सत्तुंजि;
२२ रिसह! सत्तुंजि;	उज्जिंति पहु-नेमि-जिण!
२३ उज्जिंति पहु-नेमि-जिण!	जयउ वीर! सच्चउरि-मंडण!;
२४ जयउ वीर! सच्चउरि-मंडण!;	भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय!
२५ भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय!	मुहरि पास दुह-दुरिअ-खंडण! ।
२६ मुहरि पास दुह-दुरिअ-खंडण! ।	अवर विदेहिं तित्थयरा,
२७ अवर विदेहिं तित्थयरा,	चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि,
२८ चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि,	तीआणागय-संपइ अ,
२९ तीआणागय-संपइ अ,	वंदुं जिण सव्वेवि ॥३॥
३० वंदुं जिण सव्वेवि ॥	सत्ताणवइ-सहस्सा,
३१ सत्ताणवइ-सहस्सा,	लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ ।
३२ लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ ।	बत्तीस-सय बासीयाइं,
३३ बत्तीस-सय बासीयाइं,	तिअलोए चेइए वंदे ॥४॥
३४ तिअलोए चेइए वंदे ॥	पनरस-कोडि-सयाइं,
३५ पनरस-कोडि-सयाइं,	कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना ।
३६ कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना ।	छत्तीस सहस असीइं,
३७ छत्तीस सहस असीइं,	सासय-बिंबाइं पणमामि ॥५॥

१३. श्री जं किंचि सूत्र

१		जं किंचि नाम तित्थं,
२	जं किंचि नाम तित्थं,	सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
३	सग्गे पायालि माणुसे लोए ।	जाइं जिण-बिंबाइं,
४	जाइं जिण-बिंबाइं,	ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १॥

१४. श्री नमुत्थुणं (शक्रस्तव) सूत्र

आद्याक्षर (न, आइ, पु, लो, अभ)

१		नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १॥
२	नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥	आइगराणं, तित्थयराणं,
३	आइगराणं, तित्थयराणं,	सयंसंबुद्धाणं ॥ २॥
४	सयंसंबुद्धाणं ॥	पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं,
५	पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं,	पुरिस-वर-पुंडरीआणं,
६	पुरिस-वर-पुंडरीआणं,	पुरिस-वर-गंध-हत्थीणं ॥ ३॥
७	पुरिस-वर-गंध-हत्थीणं ॥	लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं,
८	लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं,	लोग-हिआणं, लोग-पइवाणं,
९	लोग-हिआणं, लोग-पइवाणं,	लोग-पज्जो-अगराणं ॥ ४॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१० लोग-पज्जो-अगराणं ॥	अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं,
११ अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं,	मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं,
१२ मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं,	बोहि-दयाणं ॥५॥

आद्याक्षर (ध, अप्प, जि, स, जे)

१३ बोहि-दयाणं ॥	धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं,
१४ धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं,	धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं,
१५ धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं,	धम्म-वरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥६॥
१६ धम्म-वरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥	अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं,
१७ अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं,	वियट्ट-छउमाणं ॥७॥

१८ वियट्ट-छउमाणं ॥	जिणाणं जावयाणं,
१९ जिणाणं जावयाणं,	तिन्नाणं तारयाणं,
२० तिन्नाणं तारयाणं,	बुद्धाणं बोहयाणं,
२१ बुद्धाणं बोहयाणं,	मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥

२२ मुत्ताणं मोअगाणं ॥	सव्वन्नूणं सव्व-दरिसीणं,
२३ सव्वन्नूणं सव्व-दरिसीणं,	सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-
२४ सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-	मव्वाबाह-मपुणरावित्ति,
२५ मव्वाबाह-मपुणरावित्ति,	सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं,
२६ सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं,	नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ॥९॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
२७ नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ॥	जे अ अईआ सिद्धा,
२८ जे अ अईआ सिद्धा,	जे अ भविस्संति णागए काले ।
२९ जे अ भविस्संति णागए काले ।	संपइअ वट्टमाणा,
३० संपइअ वट्टमाणा,	सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

१५. श्री जावंति चेइआइं सूत्र

१	जावंति चेइआइं,
२ जावंति चेइआइं,	उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ ।
३ उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ ।	सव्वाइं ताइं वंदे,
४ सव्वाइं ताइं वंदे,	इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

१६. श्री जावंत के वि साहू सूत्र

१	जावंत के वि साहू,
२ जावंत के वि साहू,	भरहे-रवय-महाविदेहे अ ।
३ भरहे-रवय-महाविदेहे अ ।	सव्वेसिं तेसिं पणओ,
४ सव्वेसिं तेसिं पणओ,	तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥१॥

१७. श्री पंच परमेष्ठि नमस्कार सूत्र

नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्यो-पाध्याय-सर्व-साधुभ्यः ॥१॥

પક્ખી પ્રતિ૦ સૂત્રો ગોખવા માટે ગુજરાતીમાં
"સૂત્ર ગોખો અને યાદ રાખો ભાગ-૨" ઉપલબ્ધ છે.

१८. श्री उवसग्गहरं (उपसर्गहर) सूत्र

आद्याक्षर (उव, वि, चि, तु, इअ)

१		उवसग्ग हरं पासं,
२	उवसग्ग हरं पासं,	पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं ।
३	पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं ।	विसहर-विस-निन्नासं,
४	विसहर-विस-निन्नासं,	मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥
५	मंगल-कल्लाण-आवासं ॥	विसहर-फुलिंग-मंतं,
६	विसहर-फुलिंग-मंतं,	कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
७	कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।	तस्स गह-रोग-मारी,
८	तस्स गह-रोग-मारी,	दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥२॥
९	दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥	चिट्ठउ दूरे मंतो,
१०	चिट्ठउ दूरे मंतो,	तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
११	तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।	नर-तिरिएसु वि जीवा,
१२	नर-तिरिएसु वि जीवा,	पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥३॥
१३	पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥	तुह सम्मत्ते लद्धे,
१४	तुह सम्मत्ते लद्धे,	चिंतामणि-कप्पपाय-वब्भहिए ।
१५	चिंतामणि-कप्पपाय-वब्भहिए ।	पावंति अविग्घेणं,
१६	पावंति अविग्घेणं,	जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१७ जीवा अयरामरं ठाणं ॥	इअ संथुओ महायस!
१८ इअ संथुओ महायस!	भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण ।
१९ भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण ।	ता देव! दिज्ज बोहिं,
२० ता देव! दिज्ज बोहिं,	भवे भवे पास-जिणचंद! ॥५॥

१९. श्री जय वीयराय (प्रार्थना) सूत्र

आद्याक्षर (ज, लो, वा, दु, स)

१	जय वीयराय! जग-गुरु!
२ जय वीयराय! जग-गुरु!	होउ ममं तुह पभावओ भयवं!
३ होउ ममं तुह पभावओ भयवं!	भव-निव्वेओ, मग्गाणु-सारिआ
४ भव-निव्वेओ, मग्गाणु-सारिआ	इट्ठफल-सिद्धि ॥१॥
५ मग्गाणु-सारिआ इट्ठफल-सिद्धि ॥	लोग-विरुद्ध-च्चाओ,
६ लोग-विरुद्ध-च्चाओ,	गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च ।
७ गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च ।	सुहगुरु-जोगो तव्वयण-
८ सुहगुरु-जोगो तव्वयण-	सेवणा आभवमखंडा ॥२॥
९ सेवणा आभवमखंडा ॥	वारिज्जइ जइ वि नियाण-
१० वारिज्जइ जइ वि नियाण-	बंधणं वीयराय! तुह समए ।
११ बंधणं वीयराय! तुह समए ।	तह वि मम हुज्ज सेवा,
१२ तह वि मम हुज्ज सेवा,	भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१३ भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥	दुक्ख-क्खओ कम्म-क्खओ,
१४ दुक्ख-क्खओ कम्म-क्खओ,	समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ।
१५ समाहिमरणं च बोहिलाभो अ ।	संपज्जउ मह एअं,
१६ संपज्जउ मह एअं,	तुह नाह! पणाम-करणेणं ॥४॥
१७ तुह नाह! पणाम-करणेणं ॥	सर्व-मङ्गल-मांगल्यं,
१८ सर्व-मङ्गल-मांगल्यं,	सर्व-कल्याण-कारणं ।
१९ सर्व-कल्याण-कारणं ।	प्रधानं सर्व-धर्माणां,
२० प्रधानं सर्व-धर्माणां,	जैनं जयति शासनम् ॥५॥

२०. श्री अरिहंत चेइयाणं (चैत्य-स्तव) सूत्र

१	अरिहंत-चेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं ॥१॥
२ अरिहंत-चेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं ॥	वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए,
३ वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए,	सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए,
४ सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए,	बोहिलाभ-वत्तिआए
५ बोहिलाभ-वत्तिआए ॥	निरुवसग्ग-वत्तिआए ॥२॥
६ निरुवसग्ग-वत्तिआए,	सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए,
७ सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए,	अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० ॥३॥

२१. श्री कल्लाण-कंदं (पांच जिनकी थोय)

आद्याक्षर (क, अपा, नि, कुं)

१		कल्लाण-कंदं पढमं जिणिंदं,
२	कल्लाण-कंदं पढमं जिणिंदं,	संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ।
३	संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ।	पासं पयासं सुगुणिक्क-ठाणं,
४	पासं पयासं सुगुणिक्क-ठाणं,	भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं ॥१॥
५	भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं ॥	अपार-संसार समुद्द-पारं,
६	अपार-संसार समुद्द-पारं,	पत्ता सिवं दिंतु सुइक्क-सारं ।
७	पत्ता सिवं दिंतु सुइक्क-सारं ।	सव्वे जिणिंदा सुर-विंद-वंदा,
८	सव्वे जिणिंदा सुर-विंद-वंदा,	कल्लाण-वल्लीण-विसाल-कंदा ॥२॥
९	कल्लाण-वल्लीण-विसाल-कंदा ॥	निव्वाण-मग्गे वर-जाण-कप्पं,
१०	निव्वाण-मग्गे वर-जाण-कप्पं,	पणासियासेस-कुवाइ-दप्पं ।
११	पणासियासेस-कुवाइ-दप्पं ।	मयं जिणाणं सरणं बुहाणं,
१२	मयं जिणाणं सरणं बुहाणं,	नमामि निच्चं तिजग-प्पहाणं ॥३॥
१३	नमामि निच्चं तिजग-प्पहाणं ॥	कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसार-वन्ना,
१४	कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसार-वन्ना,	सरोज-हत्था कमले निसन्ना ।
१५	सरोज-हत्था कमले निसन्ना ।	वाएसिरी पुत्थय-वग्ग-हत्था,
१६	वाएसिरी पुत्थय-वग्ग-हत्था,	सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

२२. श्री संसार दावानल स्तुति

आद्याक्षर (सं, भा, बो, आमू)

१		संसार-दावानल-दाह-नीरं,
२	संसार-दावानल-दाह-नीरं,	संमोह-धूली-हरणे-समीरं ।
३	संमोह-धूली-हरणे-समीरं ।	माया-रसा-दारण-सार-सीरं,
४	माया-रसा-दारण-सार-सीरं,	नमामि वीरं गिरि-सार-धीरं ॥१॥
५	नमामि वीरं गिरि-सार-धीरं ॥	भावावनाम-सुर-दानव-मानवेन-
६	भावावनाम-सुर-दानव-मानवेन-	चूला-विलोल-कमलावलि-मालितानि ।
७	चूला-विलोल-कमलावलि-मालितानि ।	संपूरिताभिनत-लोक-समीहितानि;
८	संपूरिताभिनत-लोक-समीहितानि;	कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि ॥२॥
९	कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि ॥	बोधागाधं सुपद-पदवी नीर-पूराभिरामं,
१०	बोधागाधं सुपद-पदवी नीर-पूराभिरामं,	जीवाहिंसा-विरल-लहरी संगमागाहदेहं ।
११	जीवाहिंसा-विरल-लहरी संगमागाहदेहं ।	चूला-वेलं गुरुगम-मणि-संकुलं दूरपारं,
१२	चूला-वेलं गुरुगम-मणि-संकुलं दूरपारं,	सारं वीरागम-जलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥३॥
१३	सारं वीरागम-जलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥	आमूलालोल-धूली-बहुल-परिमला-

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१४ आमूलालोल-धूली-	
बहुल-परिमला-	लीढ-लोलालिमाला,
१५ लीढ-लोलालिमाला,	झङ्कारा-राव-सारा-मलदल-कमला-
१६ झङ्कारा-राव-सारा-	
मलदल-कमला-	गार-भूमि-निवासे!
१७ गार-भूमि-निवासे!	छाया-संभार-सारे! वर-कमल-करे!
१८ छाया-संभार-सारे!	
वर-कमल-करे!	तार-हाराभिरामे!,
१९ तार-हाराभिरामे!,	वाणी-संदोह-देहे! भव-विरह-वरं
२० वाणी-संदोह-देहे! भव-विरह-वरं	देहि मे देवि! सारं ॥४॥

२३. श्री पुक्खरवरदी (श्रुतस्तव) सूत्र

आद्याक्षर (पु, त, जा, सि)

१	पुक्खरवर-दीवड्ढे,
२ पुक्खरवर-दीवड्ढे,	धायइसंडे अ जंबूदीवे अ ।
३ धायइसंडे अ जंबूदीवे अ ।	भरहेरवय-विदेहे,
४ भरहेरवय-विदेहे,	धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥
५ धम्माइगरे नमंसामि ॥	तम-तिमिर-पडल-विद्धंस-णस्स,
६ तम-तिमिर-पडल-विद्धंस-णस्स,	सुरगण-नरिंद-महिअस्स ।
७ सुरगण-नरिंद-महिअस्स ।	सीमाधरस्स वंदे,
८ सीमाधरस्स वंदे,	पप्फोडिय-मोह-जालस्स ॥२॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
९ पप्फोडिय-मोह-जालस्स ॥	जाइ-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स ।
१० जाइ-जरा-मरण-सोग-पणासणस्स ।	कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स ॥
११ कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स ॥	को देव-दाणव-नरिंद-गणच्चिअस्स ।
१२ को देव-दाणव-नरिंद-गणच्चिअस्स ।	धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं?॥ ३॥
१३ धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं? ॥	सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए
१४ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए	नंदी सया संजमे ।
१५ नंदी सया संजमे ।	देवं-नाग-सुवन्न-किन्नर-गण-
१६ देवं-नाग-सुवन्न-किन्नर-गण-	स्सब्भूअ-भावच्चिए ॥
१७ स्सब्भूअ-भावच्चिए ॥	लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं
१८ लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं	तेलुक्क-मच्चासुरं ।
१९ तेलुक्क-मच्चासुरं ।	धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ,
२० धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ,	धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४॥
२१ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥	सुअस्स भगवओ, करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए० ॥

જીવવિચારાદિ ગોખો અને યાદ રાખો.

(૪ પ્રકરણ ગોખવા માટે)

२४. श्री सिद्धाणं-बुद्धाणं (सिद्धस्तव) सूत्र

आद्याक्षर (सि, जो, इक्को, उज्जिं, च)

१		सिद्धाणं बुद्धाणं,
२	सिद्धाणं बुद्धाणं,	पार-गयाणं परंपर-गयाणं ।
३	पार-गयाणं परंपर-गयाणं ।	लोअग्गमुवगयाणं,
४	लोअग्गमुवगयाणं,	नमो सया सव्व-सिद्धाणं ॥१॥
५	नमो सया सव्व-सिद्धाणं ॥	जो देवाण वि देवो,
६	जो देवाण वि देवो,	जं देवा पंजली नमंसंति ।
७	जं देवा पंजली नमंसंति ।	तं देवदेव-महिअं,
८	तं देवदेव-महिअं,	सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥
९	सिरसा वंदे महावीरं ॥	इक्को वि नमुक्कारो,
१०	इक्को वि नमुक्कारो,	जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स ।
११	जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स ।	संसार-सागराओ,
१२	संसार-सागराओ,	तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥
१३	तारेइ नरं व नारिं वा ॥	उज्जिंत-सेल-सिहरे,
१४	उज्जिंत-सेल-सिहरे,	दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
१५	दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।	तं धम्म-चक्कवट्टिं,
१६	तं धम्म-चक्कवट्टिं,	अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥
१७	अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥	चत्तारि अट्ठ दस दोय,
१८	चत्तारि अट्ठ दस दोय,	वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।

कडी-जोडाण		मूल-गाथा
१९	वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।	परमट्ठ-निट्ठिअट्ठा,
२०	परमट्ठ-निट्ठिअट्ठा,	सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

परमट् + ठ + निट् + ठि + अट् + ठा

२५. श्री वेयावच्चगराणं सूत्र

१		वेयावच्चगराणं, संतिगराणं,
२	वेयावच्चगराणं, संतिगराणं,	सम्मद्दिट्ठि-समाहिगराणं,
३	सम्मद्दिट्ठि-समाहिगराणं,	करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ० ॥१॥

२६. श्री भगवानादि वंदन सूत्र

१		भगवानहं, आचार्यहं,
२	भगवानहं, आचार्यहं,	उपाध्यायहं, सर्वसाधुहं ॥ ॥१॥

२७. श्री देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं (प्रतिक्रमणबीजक) सूत्र

१		इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!
२	इच्छा० सं० भगवन्!	देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं ।
३	देव० पडि० ठाउं? इच्छं ।	सव्वस्स वि देवसिअ,
४	सव्वस्स वि देवसिअ,	दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ
५	दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ	दुच्चिट्ठिअ, मिच्छा मि दुक्कडं ॥१॥

२८. श्री इच्छामि ठामि सूत्र

१		इच्छामि ठामि काउस्सग्गं,
२	इच्छामि ठामि काउस्सग्गं,	जो मे देवसिओ अइआरो कओ,
३	जो मे देवसिओ अइआरो कओ,	काइओ, वाइओ, माणसिओ,
४	काइओ, वाइओ, माणसिओ,	उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो,
५	उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो,	अकरणिज्जो, दुज्झाओ,
६	अकरणिज्जो, दुज्झाओ,	दुव्विचिंतिओ, अणायारो,
७	दुव्विचिंतिओ, अणायारो,	अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो,
८	अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो,	नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते,
९	नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते,	सुए-सामाइए ॥

दुव् + वि + चिन् + तिओ; अणिच् + छि + अव् + वो

१०	सुए-सामाइए ॥	तिण्हं-गुत्तीणं
११	तिण्हं-गुत्तीणं	चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं,
१२	चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं,	तिण्हं गुणव्वयाणं,
१३	तिण्हं गुणव्वयाणं,	चउण्हं सिक्खावयाणं,
१४	चउण्हं सिक्खावयाणं,	बारसविहस्स सावग-धम्मस्स,
१५	बारसविहस्स सावग-धम्मस्स,	जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

२९. श्री पांच आचारकी गाथा (पंचाचार सूत्र)

आद्याक्षर (ना, का, नि, प, बा)

१		नाणंमि दंसणंमि अ,
२	नाणंमि दंसणंमि अ,	चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि ।
३	चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि ।	आयरणं आयारो,
४	आयरणं आयारो,	इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १॥

५	इअ एसो पंचहा भणिओ ॥	काले विणए बहुमाणे,
६	काले विणए बहुमाणे,	उवहाणे तह अनिण्हवणे ।
७	उवहाणे तह अनिण्हवणे ।	वंजण-अत्थ-तदुभए,
८	वंजण-अत्थ-तदुभए,	अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २॥

९	अट्ठविहो नाणमायारो ॥	निस्संकिअ निक्कंखिअ,
१०	निस्संकिअ निक्कंखिअ,	निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ।
११	निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ।	उववूह-थिरीकरणे,
१२	उववूह-थिरीकरणे,	वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥ ३॥

निव् + वि + ति + गिच् + छा; अमूढ + दिट् + ठी

१३	वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥	पणिहाण-जोग-जुत्तो,
१४	पणिहाण-जोग जुत्तो,	पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ।
१५	पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ।	एस चरित्तायारो,
१६	एस चरित्तायारो,	अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१७ अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥	बारसविहंमि वि तवे,
१८ बारसविहंमि वि तवे,	सब्भिंतर-बाहिरे कुसल-दिट्ठे ।
१९ सब्भिंतर-बाहिरे कुसल-दिट्ठे ।	अगिलाइ अणाजीवी,
२० अगिलाइ अणाजीवी,	नायव्वो सो तवायारो ॥५॥

आद्याक्षर (अण, पा, अणि)

२१ नायव्वो सो तवायारो ॥	अणसण-मूणो-अरिया,
२२ अणसण-मूणो-अरिया,	वित्ती-संखेवणं रस-च्चाओ ।
२३ वित्ती-संखेवणं रस-च्चाओ ।	काय-किलेसो संलीणया य,
२४ काय-किलेसो संलीणया य,	बज्झो तवो होइ ॥६॥

२५ बज्झो तवो होइ ॥	पायच्छित्तं विणओ,
२६ पायच्छित्तं विणओ,	वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
२७ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।	झाणं उस्सग्गो वि अ,
२८ झाणं उस्सग्गो वि अ,	अब्भिंतरओ तवो होइ ॥७॥

२९ अब्भिंतरओ तवो होइ ॥	अणिगूहिअ-बल-वीरियो,
३० अणिगूहिअ-बल-वीरियो,	परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ।
३१ परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ।	जुंजइ अ जहाथामं,
३२ जुंजइ अ जहाथामं,	नायव्वो वीरिआयारो ॥८॥

आद्याक्षर याने हर गाथाका प्रथम अक्षर

३०. श्री सुगुरु वांदणा (द्वादशावर्त्तवंदन) सूत्र

१		इच्छामि खमासमणो!
२	इच्छामि खमासमणो!	वंदिउं जावणिज्जाए,
		निसीहिआए ॥१॥
३	वंदिउं जावणिज्जाए,	
	निसीहिआए ॥	अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥२॥
४	अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि	अ-हो, का-यं, का-य संफासं,
५	अ-हो, का-यं, का-य संफासं,	खमणिज्जो भे! किलामो,
६	खमणिज्जो भे! किलामो,	अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे!
७	अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे!	दिवसो वइक्कंतो? ॥३॥
८	दिवसो वइक्कंतो? ॥	ज-त्ता भे? ॥४॥
९	ज-त्ता भे? ॥	ज-व-णिज्जं च भे? ॥५॥
१०	ज-व-णिज्जं च भे? ॥	खामेमि खमासमणो!
११	खामेमि खमासमणो!	देवसिअं वइक्कमं ॥६॥

जवणिज् + जम् + च + भे

१२	देवसिअं वइक्कमं ॥	आवस्सिआए पडिक्कमामि,
१३	आवस्सिआए पडिक्कमामि,	खमासमणाणं
१४	खमासमणाणं	देवसिआए आसायणाए,
१५	देवसिआए आसायणाए,	तित्तीसन्नयराए,
१६	तित्तीसन्नयराए,	जं किंचि मिच्छाए,
१७	जं किंचि मिच्छाए,	मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए,
		काय-दुक्कडाए

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१८ मण-दुक्कडाए, वय-दुक्कडाए, काय-दुक्कडाए ॥	कोहाए माणाए मायाए लोभाए,
१९ कोहाए माणाए मायाए लोभाए,	सव्व कालिआए, सव्व मिच्छोवयाराए,
२० सव्व कालिआए, सव्व मिच्छोवयाराए,	सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए,
२१ सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए,	जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

सव् + व + मिच् + छोवयाराए;
सव् + व + धम् + माइक् + कमणाए

३१. श्री देवसिअं आलोउं सूत्र

१	इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!
२ इच्छा० संदिसह भगवन्!	देवसिअं आलोउं? इच्छं,
३ देवसिअं आलोउं? इच्छं,	आलोएमि जो मे देवसिओ०

३२. श्री सात लाख (चोरासी लाख जीवयोनिसे माफी मांगनेका) सूत्र

१	सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय,
२ सा० पृथ्वीकाय, सा० अप्काय,	सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय,
३ सा० तेउकाय, सा० वाउकाय,	दस लाख प्रत्येक-वनस्पतिकाय,
४ दस लाख प्रत्येक-वनस्पतिकाय,	चौद लाख साधारण-वनस्पतिकाय,

नोंध : सा० = सात लाख

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
५ चौद लाख साधारण- वनस्पतिकाय,	बे लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय,
६ बे० बेइंद्रिय, बे० तेइंद्रिय,	बे लाख चउरिंद्रिय, चार लाख देवता,
७ बे० चउरिंद्रिय, चार लाख देवता,	चार लाख नारकी,
८ चार लाख नारकी,	चार लाख तिर्यंच-पंचेंद्रिय,
९ चार लाख तिर्यंच-पंचेंद्रिय,	चौद लाख मनुष्य, एवंकारे

नोंध : बे० = बे लाख

१० चौद लाख मनुष्य, एवंकारे	चोरासी लाख जीवयोनिमांही,
११ चोरासी लाख जीवयोनिमांही,	मारे जीवे जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं. ॥१॥

३३. श्री अढार पापस्थानक सूत्र

१	पहेले प्राणातिपात,
२ पहेले प्राणातिपात,	बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान,
३ बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान,	चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह,
४ चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह,	छट्ठे क्रोध, सातमे मान,
५ छट्ठे क्रोध, सातमे मान,	आठमे माया, नवमे लोभ,
६ आठमे माया, नवमे लोभ,	दशमे राग, अगियारमे द्वेष,
७ दशमे राग, अगियारमे द्वेष,	बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान,

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
८ बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान,	चौदमे पैशुन्य, पंदरमे रति-अरति,
९ चौदमे पैशुन्य, पंदरमे रति-अरति,	सोळमे पर-परिवाद,
१० सोळमे पर-परिवाद,	सत्तरमे माया-मृषावाद,
११ सत्तरमे माया-मृषावाद,	अढारमे मिथ्यात्व-शल्य ।
१२ अढारमे मिथ्यात्व-शल्य ।	ए अढार पापस्थानकमांहि
१३ ए अढार पापस्थानकमांहि	मारे जीवे जे कोई पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

३४. श्री सव्वस्सवि (प्रतिक्रमण बीजक) सूत्र

१	सव्वस्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ,
२ सव्वस्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ,	दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ,
३ दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ,	इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!
४ इच्छा० संदि० भगवन्!	इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं

३५. श्री इच्छामि पडिक्कमिउं सूत्र

१	इच्छामि पडिक्कमिउं
२ इच्छामि पडिक्कमिउं	जो मे देवसिओ अइयारो कओ०

३६. श्री वंदित्तु (श्रावक प्रतिक्रमण) सूत्र

आद्याक्षर (वं, जो, दु, जं, आग)

१		वंदित्तु सव्व-सिद्धे,
२	वंदित्तु सव्व-सिद्धे,	धम्मायरिए अ सव्व-साहू अ ।
३	धम्मायरिए अ सव्व-साहू अ ।	इच्छामि पडिक्कमिउं,
४	इच्छामि पडिक्कमिउं,	सावग-धम्माइआरस्स ॥१॥

धम् + मायरिए

५	सावग-धम्माइआरस्स ॥१॥	जो मे वयाइ-आरो,
६	जो मे वयाइ-आरो,	नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
७	नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।	सुहुमो य बायरो वा,
८	सुहुमो य बायरो वा,	तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥
९	तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥	दुविहे परिग्गहम्मि,
१०	दुविहे परिग्गहम्मि,	सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
११	सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।	कारावणे अ करणे,
१२	कारावणे अ करणे,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥
१३	पडि० देसिअं सव्वं ॥३॥	जं बद्धमिंदिएहिं,
१४	जं बद्धमिंदिएहिं,	चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं;
१५	चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं;	रागेण व दोसेण व,
१६	रागेण व दोसेण व,	तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥

पडि० = पडिक्कमे, अप् + पसत् + थेहिम्

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१७ तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥	आगमणे निग्गमणे,
१८ आगमणे निग्गमणे,	ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
१९ ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।	अभिओगे अ निओगे,
२० अभिओगे अ निओगे,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥५॥

आद्याक्षर (सं, छ, पं, प, व)

२१ पडि० देसिअं सव्वं ॥५॥	संका कंख विगिच्छा,
२२ संका कंख विगिच्छा,	पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।
२३ पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।	सम्मत्तस्स इआरे,
२४ सम्मत्तस्स इआरे,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥६॥

२५ पडि० देसिअं सव्वं ॥६॥	छक्काय-समारंभे,
२६ छक्काय-समारंभे,	पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
२७ पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।	अत्तट्ठा य परट्ठा,
२८ अत्तट्ठा य परट्ठा,	उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥

२९ उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥	पंचण्ह-मणुव्वयाणं,
३० पंचण्ह-मणुव्वयाणं,	गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे ।
३१ गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे ।	सिक्खाणं च चउण्हं,
३२ सिक्खाणं च चउण्हं,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥८॥

पडि० = पडिक्कमे

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

प्रथम अणुव्रतके अतिचार

३३	पडि० देसिअं सव्वं ॥८॥	पढमे अणुव्वयम्मि,
३४	पढमे अणुव्वयम्मि,	थूलग-पाणाइवाय-विरइओ ।
३५	थूलग-पाणाइवाय-विरइओ ।	आयरियम-प्पसत्थे,
३६	आयरियम-प्पसत्थे,	इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥९॥

३७	इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥९॥	वह-बंध-छविच्छेए,
३८	वह-बंध-छविच्छेए,	अइभारे भत्त-पाण-वुच्छेए ।
३९	अइभारे भत्त-पाण-वुच्छेए ।	पढम-वयस्स-इआरे,
४०	पढम-वयस्स-इआरे,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१०॥

द्वितीय अणुव्रतके अतिचार
आद्याक्षर (बी, स, त, ते, च)

४१	पडि० देसिअं सव्वं ॥१०॥	बीए अणुव्वयम्मि,
४२	बीए अणुव्वयम्मि,	परिथूलग-अलिय-वयण-विरइओ ।
४३	परिथूलग-अलिय-वयण-विरइओ ।	आयरियम-प्पसत्थे,
४४	आयरियम-प्पसत्थे,	इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥११॥

पडि० = पडिक्कमे

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
४५ इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥ ११॥	सहसा-रहस्स-दारे,
४६ सहसा-रहस्स-दारे,	मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
४७ मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।	बीय-वयस्स-इआरे,
४८ बीय-वयस्स-इआरे,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १२॥

तृतीय अणुव्रतके अतिचार

४९ पडि० देसिअं सव्वं ॥ १२॥	तईए अणुव्वयम्मि,
५० तईए अणुव्वयम्मि,	थूलग-परदव्व-हरण-विरइओ ।
५१ थूलग-परदव्व-हरण-विरइओ ।	आयरियम-प्पसत्थे,
५२ आयरियम-प्पसत्थे,	इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥ १३॥

५३ इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥ १३॥	तेनाहड-प्पओगे,
५४ तेनाहड-प्पओगे,	तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ ।
५५ तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ ।	कूडतुल-कूडमाणे,
५६ कूडतुल-कूडमाणे,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १४॥

चतुर्थ अणुव्रतके अतिचार

५७ पडि० देसिअं सव्वं ॥ १४॥	चउत्थे अणुव्वयम्मि,
५८ चउत्थे अणुव्वयम्मि,	निच्चं परदार-गमण-विरइओ ।
५९ निच्चं परदार-गमण-विरइओ ।	आयरियम-प्पसत्थे,
६० आयरियम-प्पसत्थे,	इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥ १५॥

पडि० = पडिक्कमे

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

आद्याक्षर (अप, इत्तो, ध, ग, म)

६१	इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥ १५॥	अपरिग्गहिआ इत्तर,
६२	अपरिग्गहिआ इत्तर,	अणंग-विवाह तिव्व-अणुरागे ।
६३	अणंग-विवाह तिव्व-अणुरागे ।	चउत्थ-वयस्स-इआरे,
६४	चउत्थ-वयस्स-इआरे,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १६॥

पंचम अणुव्रतके अतिचार

६५	पडि० देसिअं सव्वं ॥ १६॥	इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि,
६६	इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि,	आयरियमप्पसत्थम्मि ।
६७	आयरियमप्पसत्थम्मि ।	परिमाण-परिच्छेए,
६८	परिमाण-परिच्छेए,	इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥ १७॥

६९	इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥ १७॥	धण-धन्न-खित्त-वत्थू,
७०	धण-धन्न-खित्त-वत्थू,	रूप्प-सुवन्ने अ कुविअ-परिमाणे ।
७१	रूप्प-सुवन्ने अ कुविअ-परिमाणे ।	दुपए चउप्पयम्मि य,
७२	दुपए चउप्पयम्मि य,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १८॥

षष्ठम व्रतके अतिचार

७३	पडि० देसिअं सव्वं ॥ १८॥	गमणस्स उ परिमाणे,
७४	गमणस्स उ परिमाणे,	दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।
७५	दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।	वुड्ढि सइ-अंतरद्धा,
७६	वुड्ढि सइ-अंतरद्धा,	पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९॥

पडि० = पडिक्कमे

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

सप्तम व्रतके अतिचार

७७	पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥१९॥	मज्जंमि अ, मंसंमि अ,
७८	मज्जंमि अ, मंसंमि अ,	पुप्फे अ फले अ गंध-मल्ले अ ।
७९	पुप्फे अ फले अ गंध-मल्ले अ ।	उवभोग-परिभोगे,
८०	उवभोग-परिभोगे,	बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥२०॥

आद्याक्षर (स, इंगा, एवं, स, न्हा)

८१	बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥२०॥	सच्चित्ते पडिबद्धे,
८२	सच्चित्ते पडिबद्धे,	अपोलि-दुप्पोलिअं च आहारे ।
८३	अपोलि-दुप्पोलिअं च आहारे ।	तुच्छोसहि-भक्खणया,
८४	तुच्छोसहि-भक्खणया,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२१॥

८५	पडि० देसिअं सव्वं ॥२१॥	इंगाली-वण-साडी,
८६	इंगाली-वण-साडी,	भाडी-फोडी सुवज्जए कम्मं ।
८७	भाडी-फोडी सुवज्जए कम्मं ।	वाणिज्जं चेव दंत,-
८८	वाणिज्जं चेव दंत,	लक्ख-रस-केस-विस-विसयं ॥२२॥

८९	लक्ख-रस-केस-विस-विसयं	एवं खु जंतपिल्लण,
९०	एवं खु जंतपिल्लण,	कम्मं निल्लंछणं च दव-दाणं ।
९१	कम्मं निल्लंछणं च दव-दाणं ।	सर-दह-तलाय-सोसं,
९२	सर-दह-तलाय-सोसं,	असई-पोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥

पडि० = पडिक्कमे

अष्टम् व्रतके अतिचार

९३	असई-पोसं च वज्जिज्जा	सत्थग्गि-मुसल-जंतग-
९४	सत्थग्गि-मुसल-जंतग-	तण-कट्ठे-मंत-मूल-भेसज्जे ।
९५	तण-कट्ठे-मंत-मूल-भेसज्जे ।	दिन्ने दवाविए वा,
९६	दिन्ने दवाविए वा,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२४॥

९७	पडि० देसिअं सव्वं ॥२४॥	न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग-
९८	न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग-	विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे ।
९९	विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे ।	वत्थासण-आभरणे,
१००	वत्थासण-आभरणे,	पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥

आद्याक्षर (कं, ति, आण, सं, स)

१०१	पडि० देसिअं सव्वं ॥२५॥	कंदप्पे कुक्कुइए,
१०२	कंदप्पे कुक्कुइए,	मोहरि अहिगरण भोग-अइरित्ते ।
१०३	मोहरि अहिगरण भोग-अइरित्ते ।	दंडम्मि अणट्ठाए,
१०४	दंडम्मि अणट्ठाए,	तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥२६॥

नवमे व्रत के अतिचार

१०५	तइअम्मि गुणव्वए निंदे	तिविहे दुप्पणिहाणे,
१०६	तिविहे दुप्पणिहाणे,	अणवट्ठाणे तहा सइ-विहूणे ।
१०७	अणवट्ठाणे तहा सइ-विहूणे ।	सामाइअ वितह-कए,
१०८	सामाइअ वितह-कए,	पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

दसमे व्रतके अतिचार

१०९	पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७॥	आणवणे पेसवणे,
११०	आणवणे पेसवणे,	सद्दे रूवे अ पुग्गल-क्खेवे ।
१११	सद्दे रूवे अ पुग्गल-क्खेवे ।	देसावगासिअम्मि,
११२	देसावगासिअम्मि,	बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८॥

ग्यारहवें व्रतके अतिचार

११३	बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८॥	संथारुच्चारविहि-
११४	संथारुच्चारविहि-	पमाय तह चेव भोयणाभोए ।
११५	पमाय तह चेव भोयणाभोए ।	पोसह-विहि-विवरीए,
११६	पोसह-विहि-विवरीए,	तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९॥

बारवें व्रतके अतिचार

११७	तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९॥	सच्चित्ते निक्खिवणे,
११८	सच्चित्ते निक्खिवणे,	पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ।
११९	पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ।	कालाइक्कम-दाणे,
१२०	कालाइक्कम-दाणे,	चउत्थे-सिक्खावए निंदे ॥ ३०॥

आद्याक्षर (सु, सा, इह, का, वं)

१२१	चउत्थे-सिक्खावए निंदे ॥ ३०॥	सुहिएसु अ दुहिएसु अ,
१२२	सुहिएसु अ दुहिएसु अ,	जा मे अस्संजएसु अणुकंपा ।
१२३	जा मे अस्संजएसु अणुकंपा ।	रागेण व दोसेण व,
१२४	रागेण व दोसेण व,	तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१२५ तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥	साहूसु संविभागो,
१२६ साहूसु संविभागो,	न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु ।
१२७ न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु ।	संते फासुअ-दाणे,
१२८ संते फासुअ-दाणे,	तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥
१२९ तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥	इहलोए परलोए,
१३० इहलोए परलोए,	जीविअ-मरणे अ आसंस-पओगे ।
१३१ जीविअ-मरणे अ आसंस-पओगे ।	पंचविहो अइयारो,
१३२ पंचविहो अइयारो,	मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥
१३३ मा मज्झ हुज्ज मरणंते	काएण काइअस्स,
१३४ काएण काइअस्स,	पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
१३५ पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।	मणसा माणसिअस्स,
१३६ मणसा माणसिअस्स,	सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥
१३७ सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥	वंदण-वय-सिक्खा-गारवेसु,
१३८ वंदण-वय-सिक्खा-गारवेसु,	सन्ना-कसाय-दंडेसु ।
१३९ सन्ना-कसाय-दंडेसु ।	गुत्तीसु अ समिइसु अ,
१४० गुत्तीसु अ समिइसु अ,	जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥

आद्याक्षर (स, तं, ज, एवं, क)

१४१	जो अइआरो अ तं निंदे	सम्मद्दिट्ठी जीवो,
१४२	सम्मद्दिट्ठी जीवो,	जइ वि हु पावं समायरे किंचि ।
१४३	जइ वि हु पावं समायरे किंचि ।	अप्पो-सि होइ बंधो,
१४४	अप्पो-सि होइ बंधो,	जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥

१४५	जेण न निद्धंधसं कुणइ	तं पि हु सपडिक्कमणं,
१४६	तं पि हु सपडिक्कमणं,	सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ।
१४७	सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ।	खिप्पं उवसामेइ,
१४८	खिप्पं उवसामेइ,	वाहि-व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥

१४९	वाहि-व्व सुसिक्खिओ विज्जो	जहा विसं कुट्ठ-गयं,
१५०	जहा विसं कुट्ठ-गयं,	मंत-मूल-विसारया ।
१५१	मंत-मूल-विसारया ।	विज्जा हणंति मंतेहिं,
१५२	विज्जा हणंति मंतेहिं,	तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥

१५३	तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥	एवं अट्ठविहं कम्मं,
१५४	एवं अट्ठविहं कम्मं,	राग-दोस-समज्जिअं ।
१५५	राग-दोस-समज्जिअं ।	आलोअंतो अ निंदंतो,
१५६	आलोअंतो अ निंदंतो,	खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१५७ खिप्पं हणइ सुसावओ	कय-पावो वि मणुस्सो,
१५८ कय-पावो वि मणुस्सो,	आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे ।
१५९ आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे ।	होइ अइरेग-लहुओ,
१६० होइ अइरेग-लहुओ,	ओहरिअ-भरुव्व भारवहो ॥४०॥

आद्याक्षर (आव, आलो, त, जा, जा)

१६१ ओहरिअ-भरुव्व भारवहो	आवस्सएण एएण,
१६२ आवस्सएण एएण,	सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
१६३ सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।	दुक्खाणमंत किरिअं,
१६४ दुक्खाणमंत किरिअं,	काही अचिरेण कालेण ॥४१॥

१६५ काही अचिरेण कालेण ॥४१॥	आलोयणा बहुविहा,
१६६ आलोयणा बहुविहा,	न य संभरिआ पडिक्कमण-काले ।
१६७ न य संभरिआ पडिक्कमण-काले ।	मूलगुण-उत्तरगुणे,
१६८ मूलगुण-उत्तरगुणे,	तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥

१६९ तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥	तस्स धम्मस्स केवलि-पन्नत्तस्स-
१७० तस्स धम्मस्स केवलि-पन्नत्तस्स-	अब्भुट्ठिओमि आराहणाए,
१७१ अब्भुट्ठिओमि आराहणाए,	विरओमि विराहणाए ।
१७२ विरओमि विराहणाए ।	तिविहेण पडिक्कंतो,
१७३ तिविहेण पडिक्कंतो,	वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१७४ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥	जावंति चेइआइं,
१७५ जावंति चेइआइं,	उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ ।
१७६ उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ ।	सव्वाइं ताइं वंदे,
१७७ सव्वाइं ताइं वंदे,	इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥
१७८ इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥	जावंत के वि साहू,
१७९ जावंत के वि साहू,	भरहे-रवय-महाविदेहे अ ।
१८० भरहे-रवय-महाविदेहे अ ।	सव्वेसिं तेसिं पणओ,
१८१ सव्वेसिं तेसिं पणओ,	तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥४५॥

आद्याक्षर (चि, म, प, खा, एव)

१८२ तिविहेण तिदंड-विरयाणं	चिर संचिय-पाव पणासणीइ,
१८३ चिर संचिय-पाव पणासणीइ,	भव-सय-सहस्स-महणीए ।
१८४ भव-सय-सहस्स-महणीए ।	चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ,
१८५ चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ,	वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥
१८६ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥	मम मंगलमरिहंता,
१८७ मम मंगलमरिहंता,	सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
१८८ सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।	सम्मद्दिट्ठी देवा,
१८९ सम्मद्दिट्ठी देवा,	दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१९० दिंतु समाहिं च बोहिं च	पडिसिद्धाणं करणे,
१९१ पडिसिद्धाणं करणे,	किच्चाणमकरणे अ पडिक्कमणं ।
१९२ किच्चाणमकरणे अ पडिक्कमणं ।	असद्दहणे अ तहा,
१९३ असद्दहणे अ तहा,	विवरीअ-परूवणाए अ ॥४८॥
१९४ विवरीअ-परूवणाए अ	खामेमि सव्व जीवे,
१९५ खामेमि सव्व जीवे,	सव्वे जीवा खमंतु मे ।
१९६ सव्वे जीवा खमंतु मे ।	मित्ती मे सव्वभूएसु,
१९७ मित्ती मे सव्वभूएसु,	वेरं मज्झ न केणइ ॥४९॥
१९८ वेरं मज्झ न केणइ ॥४९॥	एवमहं आलोइअ,
१९९ एवमहं आलोइअ,	निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ।
२०० निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ।	तिविहेण पडिक्कंतो,
२०१ तिविहेण पडिक्कंतो,	वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

वंदित्तु आद्याक्षर

(वं, जो, दु, जं, आग) (सं, छ, पं, प, व) (१-१०)
(बी, स, त, ते, च) (अप, इत्तो, ध, ग, म) (११-२०)
(स, इंगा, एवं, स, न्हा) (कं, ति, आण, सं, स) (२१-३०)
(सु, सा, इह, का, वं) (स, तं, ज, एवं, क) (३१-४०
(आव, आलो, त, जा, जा) (चि, म, प, खा, एव) (४१-५०)

३७. श्री आयरिय उवज्झाए सूत्र

आद्याक्षर (आय, स, स)

१		आयरिय-उवज्झाए,
२	आयरिय-उवज्झाए,	सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ ।
३	सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ ।	जे मे केइ कसाया,
४	जे मे केइ कसाया,	सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥
५	सव्वे तिविहेण खामेमि ॥	सव्वस्स समण-संघस्स,
६	सव्वस्स समण-संघस्स,	भगवओ-अंजलिं-करिअ-सीसे ।
७	भगवओ-अंजलिं-करिअ-सीसे ।	सव्वं खमावइत्ता,
८	सव्वं खमावइत्ता,	खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥२॥
९	खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥	सव्वस्स जीव-रासिस्स,
१०	सव्वस्स जीव-रासिस्स,	भावओ धम्म-निहिअ-नियचित्तो ।
११	भावओ धम्म-निहिअ-नियचित्तो ।	सव्वं खमावइत्ता,
१२	सव्वं खमावइत्ता,	खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥३॥

ઉ ભાષ્ય કંઠસ્થ ગોખવા માટે

ભાષ્યત્રયમ્ ગોખો અને યાદ રાખો.

३८. श्री नमोऽस्तु वर्द्धमानाय (सायं वीरस्तुति) सूत्र

आद्याक्षर (न, ये, क)

१		नमोऽस्तु वर्द्धमानाय,
२	नमोऽस्तु वर्द्धमानाय,	स्पर्द्धमानाय कर्मणा ।
३	स्पर्द्धमानाय कर्मणा ।	तज्जयाऽवाप्त-मोक्षाय,
४	तज्जयाऽवाप्त-मोक्षाय,	परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥१॥
५	परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥	येषां विकचारविन्द-राज्या,
६	येषां विकचारविन्द-राज्या,	ज्यायः क्रम-कमलावलिं दधत्या ।
७	ज्यायः क्रम-कमलावलिं दधत्या ।	सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं,
८	सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं,	कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥
९	कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥	कषायतापार्दित-जन्तु-निर्वृतिं,
१०	कषायतापार्दित-जन्तु-निर्वृतिं,	करोति यो जैन-मुखाम्बुदोद्गतः ।
११	करोति यो जैन-मुखाम्बुदोद्गतः ।	स शुक्र-मासोद्भव-वृष्टि-सन्निभो,
१२	स शुक्र-मासोद्भव-वृष्टि-सन्निभो,	दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

तज् + जया + वाप् + त

मुखाम् + बु + दोद् + गतः

३९. श्री विशाललोचन (प्रभातिक वीर स्तुति) सूत्र

आद्याक्षर (वि, ये, क)

१		विशाल-लोचन-दलं,
२	विशाल-लोचन-दलं,	प्रोद्यद्दन्तांशु-केसरम् ।
३	प्रोद्यद्दन्तांशु-केसरम् ।	प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य,
४	प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य,	मुख-पद्मं पुनातु वः ॥१॥

प्रोद् + यद् + दन् + तान् + शु

५	मुख-पद्मं पुनातु वः ॥	येषामभिषेक-कर्म कृत्वा,
६	येषामभिषेक-कर्म कृत्वा,	मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेन्द्राः ।
७	मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेन्द्राः ।	तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं,
८	तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं,	प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥

९	प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥	कलङ्क-निर्मुक्तममुक्त-पूर्णतं,
१०	कलङ्क-निर्मुक्तममुक्त-पूर्णतं,	कुतर्क-राहु-ग्रसनं सदोदयम् ।
११	कुतर्क-राहु-ग्रसनं सदोदयम् ।	अपूर्व-चन्द्रं जिन-चन्द्र-भाषितं,
१२	अपूर्व-चन्द्रं जिन-चन्द्र-भाषितं,	दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतम् ॥३॥

કર્મગ્રંથ (૧-૬) ગોખો અને યાદ રાખો.

४०. श्री श्रुतदेवताकी स्तुति

१	सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ०	
२		सुअदेवया भगवई,
३	सुअदेवया भगवई,	नाणावरणीय-कम्म-संघायं ।
४	नाणावरणीय-कम्म-संघायं ।	तेसिं खवेउ सययं,
५	तेसिं खवेउ सययं,	जेसिं सुअ-सायरे भत्ति ॥ १॥

४१. श्री क्षेत्रदेवताकी स्तुति

१	खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थं०	
२		जिसे खित्ते साहू,
३	जिसे खित्ते साहू,	दंसण-नाणेहिं चरण-सहिएहिं ।
४	दंसण-नाणेहिं चरण-सहिएहिं ।	साहंति मुक्ख-मग्गं,
५	साहंति मुक्ख-मग्गं,	सा देवी हरउ दुरियाइं ॥ १॥

४२. श्री श्रुतदेवताकी स्तुति

१		कमल-दल-विपुल-नयना,
२	कमल-दल-विपुल-नयना,	कमल-मुखी-कमलगर्भ-सम-गौरी ।
३	कमल-मुखी-कमलगर्भ-सम-गौरी ।	कमले स्थिता भगवती,
४	कमले स्थिता भगवती,	ददातु श्रुत-देवता सिद्धिम् ॥ १॥

४३. श्री भवनदेवताकी स्तुति

१	भवण-देवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ०	
२		ज्ञानादि गुण-युतानां,
३	ज्ञानादि गुण-युतानां,	नित्यं स्वाध्याय-संयम-रतानाम् ।
४	नित्यं स्वाध्याय-संयम-रतानाम् ।	विदधातु भवनदेवी,
५	विदधातु भवनदेवी,	शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १॥

४४. श्री क्षेत्रदेवताकी स्तुति

१		यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य,
२	यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य,	साधुभिः साध्यते क्रिया ।
३	साधुभिः साध्यते क्रिया ।	सा क्षेत्र-देवता नित्यं,
४	सा क्षेत्र-देवता नित्यं,	भूयान्नः सुखदायिनी ॥ १॥

४५. श्री अड्ढाइज्जेसु (मुनिवंदन) सूत्र

१		अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु,
२	अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु,	पनरससु, कम्मभूमिसु ।
३	पनरससु, कम्मभूमिसु ।	जावंत के वि साहू
४	जावंत के वि साहू	रयहरण-गुच्छ-पडिग्गहधारा ॥ १॥

अड् + ढाइज् + जेसु

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
५ रयहरण-गुच्छ-पडिग्गहधारा ॥	पंच-महव्वय-धारा,
६ पंच-महव्वय-धारा,	अट्ठारस-सहस्स-सीलंग-धारा ।
७ अट्ठारस-सहस्स-सीलंग-धारा ।	अक्खुयायार-चरित्ता,
८ अक्खुयायार-चरित्ता,	ते सव्वे सिरसा मणसा
९ ते सव्वे सिरसा मणसा	मत्थएण वंदामि ॥ २॥

४६. श्री वरकनक (१७० जिन स्तुति) सूत्र

१	वर-कनक-शङ्ख-विद्रुम-
२ वर-कनक-शङ्ख-विद्रुम-	मरकत-घन-सन्निभं विगत-मोहम् ।
३ मरकत-घन-सन्निभं विगत-मोहम् ।	सप्तति-शतं जिनानां,
४ सप्तति-शतं जिनानां,	सर्वामर-पूजितं वन्दे ॥ १॥

सन् + नि + भम्

४७. श्री लघुशान्ति स्तव

आद्याक्षर (शा, ओमि, स, स, स)

१	शान्तिं शान्ति-निशान्तं,
२ शान्तिं शान्ति-निशान्तं,	शान्तं शान्ताऽशिवं नमस्कृत्य ।
३ शान्तं शान्ताऽशिवं नमस्कृत्य ।	स्तोतुः शान्ति-निमित्तं,
४ स्तोतुः शान्ति-निमित्तं,	मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
५ मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥	ओमिति निश्चित वचसे,
६ ओमिति निश्चित वचसे,	नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ।
७ नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ।	शान्ति-जिनाय जयवते,
८ शान्ति-जिनाय जयवते,	यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥२॥
९ यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥	सकलातिशेषक-महा-संपत्ति,
१० सकलातिशेषक-महा-संपत्ति,	समन्विताय शस्याय ।
११ समन्विताय शस्याय ।	त्रैलोक्य-पूजिताय च,
१२ त्रैलोक्य-पूजिताय च,	नमो नमः शान्तिदेवाय ॥३॥
१३ नमो नमः शान्तिदेवाय ॥	सर्वामर-सुसमूह-
१४ सर्वामर-सुसमूह-	स्वामिक-संपूजिताय न जिताय ।
१५ स्वामिक-संपूजिताय न जिताय ।	भुवन-जन-पालनोद्यत-
१६ भुवन-जन-पालनोद्यत-	तमाय सततं नमस्तस्मै ॥४॥
१७ तमाय सततं नमस्तस्मै ॥	सर्व-दुरितौघ-नाशन-कराय
१८ सर्व-दुरितौघ-नाशन-कराय	सर्वाऽशिव-प्रशमनाय ।
१९ सर्वाऽशिव-प्रशमनाय ।	दुष्ट-ग्रह-भूत-पिशाच-
२० दुष्ट-ग्रह-भूत-पिशाच-	शाकिनीनां प्रमथनाय ॥५॥

વીતરાગ-સ્તોત્ર ગોખો અને યાદ રાખો.

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

आद्याक्षर (य, भ, स, भ, भ)

२१	शाकिनीनां प्रमथनाय ॥	यस्येति नाम-मन्त्र-प्रधान
२२	यस्येति नाम-मन्त्र-प्रधान-	वाक्योपयोग-कृततोषा ।
२३	वाक्योपयोग-कृततोषा ।	विजया कुरुते जनहित-मिति च
२४	विजया कुरुते जनहित-मिति च	नुता नमत तं शान्तिम् ॥६॥

वाक् + यो + पयोग

२५	मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥	भवतु नमस्ते भगवति!
२६	भवतु नमस्ते भगवति!	विजये! सुजये! परापरैरजिते! ।
२७	विजये! सुजये! परापरैरजिते! ।	अपराजिते! जगत्यां,
२८	अपराजिते! जगत्यां,	जयतीति जयावहे! भवति! ॥७॥

परा + परै + रजिते

२९	जयतीति जयावहे! भवति! ॥	सर्वस्यापि च सङ्घस्य,
३०	सर्वस्यापि च सङ्घस्य,	भद्र-कल्याण-मंगल-प्रददे! ।
३१	भद्र-कल्याण-मंगल-प्रददे! ।	साधूनां च सदा-शिव-
३२	साधूनां च सदा-शिव-	सुतुष्टि-पुष्टि-प्रदे! जीया: ॥८॥

३३	सुतुष्टि-पुष्टि-प्रदे! जीया: ॥	भव्यानां कृत-सिद्धे!
३४	भव्यानां कृत-सिद्धे!	निर्वृति-निर्वाण-जननि! सत्त्वानाम् ।
३५	निर्वृति-निर्वाण-जननि! सत्त्वानाम् ।	अभय-प्रदान-निरते!
३६	अभय-प्रदान-निरते!	नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे! तुभ्यम् ॥९॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
३७ नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे! तुभ्यम् ॥	भक्तानां जन्तूनां,
३८ भक्तानां जन्तूनां,	शुभावहे! नित्यमुद्यते! देवि! ।
३९ शुभावहे! नित्यमुद्यते! देवि! ।	सम्यग्-दृष्टिनां
४० सम्यग्-दृष्टिनां	धृति-रति-मति-बुद्धि-प्रदानाय ॥१०॥

आद्याक्षर (जि, स, अथ, भ, एवं)

४१ धृति-रति-मति-बुद्धि-प्रदानाय ॥	जिनशासन-निरतानां,
४२ जिनशासन-निरतानां,	शान्ति-नतानां च जगति जनतानाम् ।
४३ शान्ति-नतानां च जगति जनतानाम् ।	श्रीसम्पत्-कीर्ति-यशो-वर्द्धनि!
४४ श्रीसम्पत्-कीर्ति-यशो-वर्द्धनि!	जय देवि! विजयस्व ॥११॥
४५ जय देवि! विजयस्व ॥	सलिलानल-विष-विषधर-
४६ सलिलानल-विष-विषधर-	दुष्टग्रह राज-रोग-रण-भयतः ।
४७ दुष्टग्रह राज-रोग-रण-भयतः ।	राक्षस-रिपु-गण-मारी-
४८ राक्षस-रिपु-गण-मारी	चौरेति - श्वापदादिभ्यः ॥१२॥
४९ चौरेति - श्वापदादिभ्यः ॥	अथ रक्ष रक्ष सुशिवं,
५० अथ रक्ष रक्ष सुशिवं,	कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति ।
५१ कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति ।	तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं,
५२ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं,	कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम् ॥१३॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

५३	कुरु कुरु स्वस्तिं च	
	कुरु कुरु त्वम् ॥	भगवति! गुणवति! शिव-शान्ति-
५४	भगवति! गुणवति! शिव-शान्ति-	तुष्टि-पुष्टि स्वस्तीह कुरु करु जनानाम् ।
५५	तुष्टि-पुष्टि स्वस्तीह	
	कुरु करु जनानाम् ।	ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः
५६	ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः	यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥१४॥

५७	यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥	एवं यन्नामाक्षर-
५८	एवं यन्नामाक्षर-	पुरस्सरं संस्तुता जया-देवी ।
५९	पुरस्सरं संस्तुता जया-देवी ।	कुरुते शान्तिं नमतां,
६०	कुरुते शान्तिं नमतां,	नमो नमः शान्तये तस्मै ॥१५॥

आद्याक्षर (इति, य, उप, स)

६१	नमो नमः शान्तये तस्मै ॥	इति पूर्व-सूरि-दर्शित-
६२	इति पूर्व-सूरि-दर्शित-	मन्त्रपद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः ।
६३	मन्त्रपद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः ।	सलिलादि-भय-विनाशी,
६४	सलिलादि-भय-विनाशी	शान्त्यादि-करश्च भक्तिमताम् ॥१६॥

६५	शान्त्यादि-करश्च भक्तिमताम् ॥	यश्चैनं पठति सदा,
६६	यश्चैनं पठति सदा,	शृणोति भावयति वा यथायोगम् ।
६७	शृणोति भावयति वा यथायोगम् ।	स हि शान्तिपदं यायात्,
६८	स हि शान्तिपदं यायात्,	सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

६९	सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥	उपसर्गाः क्षयं यान्ति,
७०	उपसर्गाः क्षयं यान्ति,	छिद्यन्ते विघ्न-वल्लयः ।
७१	छिद्यन्ते विघ्न-वल्लयः ।	मनः प्रसन्नतामेति,
७२	मनः प्रसन्नतामेति,	पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥

७३	पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥	सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यं,
७४	सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यं,	सर्व-कल्याण-कारणम् ।
७५	सर्व-कल्याण-कारणम् ।	प्रधानं सर्व-धर्माणां,
७६	प्रधानं सर्व-धर्माणां,	जैनं जयति शासनम् ॥१९॥

४८. श्री चउक्कसाय चैत्यवंदन

१		चउक्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु,
२	चउक्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु,	दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु ।
३	दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु ।	सरस-पियंगु-वन्नु गय-गामिउ,
४	सरस-पियंगु-वन्नु गय-गामिउ,	जयउ पासु भुवणत्तय-सामिउ ॥१॥

चउक् + कसाय, पडिमल् + लुल् + लूरणु

५	जयउ पासु भुवणत्तय-सामिउ ॥	जसु तणु-कंति-कडप्प सिणिद्धउ,
६	जसु तणु-कंति-कडप्प सिणिद्धउ,	सोहइ फणि-मणि-किरणा-लिद्धउ ।
७	सोहइ फणि-मणि-किरणा-लिद्धउ ।	नं नव-जलहर तडिल्लय-लंछिउ,
८	नं नव-जलहर तडिल्लय-लंछिउ,	सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ॥२॥

तडिल् + लय

४९. श्री भरहेसरकी सज्झाय

आद्याक्षर (भ, मे, ह, जं, अज्ज)

१		भरहेसर बाहुबली,
२	भरहेसर बाहुबली,	अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो ।
३	अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो ।	सिरिओ अणिआउत्तो,
४	सिरिओ अणिआउत्तो,	अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥
५	अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥	मेअज्ज थूलिभद्दो,
६	मेअज्ज थूलिभद्दो,	वयररिसी नंदिसेण सिंहगिरी ।
७	वयररिसी नंदिसेण सिंहगिरी ।	कयवन्नो अ सुकोसल,
८	कयवन्नो अ सुकोसल,	पुंडरिओ केसि करकंडू ॥२॥
९	पुंडरिओ केसि करकंडू ॥	हल्ल विहल्ल सुदंसण,
१०	हल्ल विहल्ल सुदंसण,	साल महासाल सालिभद्दो अ ।
११	साल महासाल सालिभद्दो अ ।	भद्दो दसन्नभद्दो,
१२	भद्दो दसन्नभद्दो,	पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥३॥
१३	पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥	जंबुपहू वंकचूलो,
१४	जंबुपहू वंकचूलो,	गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ।
१५	गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ।	धन्नो इलाईपुत्तो,
१६	धन्नो इलाईपुत्तो,	चिलाईपुत्तो अ बाहुमुणी ॥४॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

१७	चिलाईपुत्तो अ बाहुमुणी ॥	अज्जगिरि अज्जरक्खिअ,
१८	अज्जगिरि अज्जरक्खिअ,	अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ।
१९	अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ।	कालयसूरी संबो,
२०	कालयसूरी संबो,	पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥५॥

आद्याक्षर (प, एमा, सु, रा, बं)

२१	पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥	पभवो विण्हुकुमारो,
२२	पभवो विण्हुकुमारो,	अद्दकुमारो दढप्पहारी अ ।
२३	अद्दकुमारो दढप्पहारी अ ।	सिज्जंस कूरगडू अ,
२४	सिज्जंस कूरगडू अ,	सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥६॥

दढप् + पहारी

२५	सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥	एमाई महासत्ता,
२६	एमाई महासत्ता,	दिंतु सुहं गुण-गणेहिं संजुत्ता ।
२७	दिंतु सुहं गुण-गणेहिं संजुत्ता ।	जेसिं नाम-ग्गहणे,
२८	जेसिं नाम-ग्गहणे,	पाव-प्पबंधा विलिज्जंति ॥७॥

२९	पाव-प्पबंधा विलिज्जंति ॥	सुलसा चंदनबाला,
३०	सुलसा चंदनबाला,	मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।
३१	मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।	नमयासुंदरी सीया,
३२	नमयासुंदरी सीया,	नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥८॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
३३ नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥	राइमई रिसिदत्ता,
३४ राइमई रिसिदत्ता,	पउमावइ अंजणा सिरीदेवी ।
३५ पउमावइ अंजणा सिरीदेवी ।	जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई,
३६ जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई,	पभावइ चिल्लणादेवी ॥ ९॥
३७ पभावइ चिल्लणादेवी ॥	बंभी सुंदरी रूप्पिणी,
३८ बंभी सुंदरी रूप्पिणी,	रेवई कुंती सिवा जयंती य ।
३९ रेवई कुंती सिवा जयंती य ।	देवई दोवई धारणी,
४० देवई दोवई धारणी,	कलावई पुप्फचूला य ॥ १०॥

आद्याक्षर (प, ज, इच्चा)

४१ कलावई पुप्फचूला य ॥	पउमावई अ गोरी,
४२ पउमावई अ गोरी,	गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ।
४३ गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ।	जंबूवई सच्चभामा,
४४ जंबूवई सच्चभामा,	रुप्पिणी कण्हट्ठ महिसीओ ॥ ११॥

कण् + हट् + ठ

४५ रुप्पिणी कण्हट्ठ महिसीओ ॥	जक्खा य जक्खदिन्ना,
४६ जक्खा य जक्खदिन्ना,	भूआ तह चेव भूअदिन्ना य ।
४७ भूआ तह चेव भूअदिन्ना य ।	सेणा वेणा रेणा,
४८ सेणा वेणा रेणा,	भइणीओ थूलिभद्दस्स ॥ १२॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
४९ भइणीओ थूलिभद्दस्स ॥	इच्चाई महासईओ,
५० इच्चाई महासईओ,	जयंति अकलंक-सील-कलिआओ ।
५१ जयंति अकलंक-सील-कलिआओ ।	अज्जवि वज्जइ जासिं,
५२ अज्जवि वज्जइ जासिं,	जस-पडहो तिहुअणे सयले ॥१३॥

५०. श्री मन्नह जिणाणं सूत्र

आद्याक्षर (म, प, जि, उव, सं)

१	मन्नह जिणाणमाणं,
२ मन्नह जिणाणमाणं,	मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।
३ मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।	छव्विह-आवस्सयम्मि,
४ छव्विह-आवस्सयम्मि	उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥१॥

जिणाण + माणम्

५ उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥	पव्वेसु पोसहवयं,
६ पव्वेसु पोसहवयं,	दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।
७ दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।	सज्झाय-नमुक्कारो,
८ सज्झाय-नमुक्कारो,	परोवयारो अ जयणा अ ॥२॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
९ परोवयारो अ जयणा अ ॥	जिण-पूआ जिण-थुणणं,
१० जिण-पूआ जिण-थुणणं,	गुरु-थुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।
११ गुरु-थुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।	ववहारस्स य सुद्धी,
१२ ववहारस्स य सुद्धी,	रह-जत्ता तित्थ-जत्ता य ॥३॥
१३ रह-जत्ता तित्थ-जत्ता य ॥	उवसम-विवेग-संवर,
१४ उवसम-विवेग-संवर,	भासा-समिइ छजीव-करुणा य ।
१५ भासा-समिइ छजीव-करुणा य ।	धम्मिअ-जण-संसग्गो,
१६ धम्मिअ-जण-संसग्गो,	करण-दमो चरण-परिणामो ॥४॥
१७ करण-दमो चरण-परिणामो ॥	संघोवरि बहुमाणो,
१८ संघोवरि बहुमाणो,	पुत्थय-लिहणं पभावणा तित्थे ।
१९ पुत्थय-लिहणं पभावणा तित्थे ।	सड्ढाण किच्चमेअं,
२० सड्ढाण किच्चमेअं,	निच्चं सुगुरु-वएसेणं ॥५॥

५१. श्री सकलतीर्थ (तीर्थ वंदना) सूत्र

आद्याक्षर (स, बी, छ, अग्या, स)

१	सकल तीर्थ वंदुं कर जोड,
२ सकल तीर्थ वंदुं कर जोड,	जिनवर-नामे मंगल कोड ।
३ जिनवर-नामे मंगल कोड ।	पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश,
४ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश,	जिनवर-चैत्य नमुं निशदिश ॥१॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

५	जिनवर-चैत्य नमुं निशदिश ॥	बीजे लाख अट्ठावीस कह्यां,
६	बीजे लाख अट्ठावीस कह्यां,	त्रीजे बार लाख सद्दह्यां ।
७	त्रीजे बार लाख सद्दह्यां ।	चोथे स्वर्गे अड लखधार,
८	चोथे स्वर्गे अड लखधार,	पाँचमे वंदुं लाख ज चार ॥२॥
९	पाँचमे वंदुं लाख ज चार ॥	छट्ठे स्वर्गे सहस पचास,
१०	छट्ठे स्वर्गे सहस पचास,	सातमे चालीस सहस प्रासाद ।
११	सातमे चालीस सहस प्रासाद ।	आठमे स्वर्गे छ हजार,
१२	आठमे स्वर्गे छ हजार,	नव दशमे वंदुं शत चार ॥३॥
१३	नव दशमे वंदुं शत चार ॥	अग्यार-बारमे त्रणसें सार,
१४	अग्यार-बारमे त्रणसें सार,	नव-ग्रैवेयके त्रणसें अढार ।
१५	नव-ग्रैवेयके त्रणसें अढार ।	पाँच अनुत्तर सर्वे मळी,
१६	पाँच अनुत्तर सर्वे मळी,	लाख चोराशी अधिकां वळी ॥४॥
१७	लाख चोराशी अधिकां वळी ॥	सहस सत्ताणुं त्रेवीस सार,
१८	सहस सत्ताणुं त्रेवीस सार,	जिनवर भवनतणो अधिकार ।
१९	जिनवर भवनतणो अधिकार ।	लांबां सो जोजन विस्तार,
२०	लांबां सो जोजन विस्तार,	पचास ऊंचां बहोंतेर धार ॥५॥

आद्याक्षर (एक, सा, एक, ब, व्यं)

२१	पचास ऊंचां बहोंतेर धार ॥	एकसो एंशी बिंब प्रमाण,
२२	एकसो एंशी बिंब प्रमाण,	सभा-सहित एक चैत्ये जाण ।
२३	सभा-सहित एक चैत्ये जाण ।	सो कोड बावन कोड संभाल,
२४	सो कोड बावन कोड संभाल,	लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥६॥

२५	लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥	सातसें उपर साठ विशाल,
२६	सातसें उपर साठ विशाल,	सवि बिंब प्रणमुं त्रण काल ।
२७	सवि बिंब प्रणमुं त्रण काल ।	सात कोड ने बहोंतेर लाख,
२८	सात कोड ने बहोंतेर लाख,	भवनपतिमां देवल भाख ॥७॥

२९	भवनपतिमां देवल भाख ॥	एकसो एंशी बिंब प्रमाण,
३०	एकसो एंशी बिंब प्रमाण,	एक एक चैत्ये संख्या जाण ।
३१	एक एक चैत्ये संख्या जाण ।	तेरसें कोड, नेव्यासी कोड,
३२	तेरसें कोड, नेव्यासी कोड,	साठ लाख वंदुं कर जोड ॥८॥

३३	साठ लाख वंदुं कर जोड ॥	बत्रीसें ने ओगणसाठ,
३४	बत्रीसें ने ओगणसाठ,	तिर्च्छा-लोकमां चैत्यनो पाठ ।
३५	तिर्च्छा-लोकमां चैत्यनो पाठ ।	त्रण लाख एकाणुं हजार,
३६	त्रण लाख एकाणुं हजार,	त्रणसें वीश ते बिंब जुहार ॥९॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

३७	त्रणसें वीश ते बिंब जुहार ॥	व्यंतर ज्योतिषीमां वळी जेह,
३८	व्यंतर ज्योतिषीमां वळी जेह,	शाश्वता जिन वंदुं तेह ।
३९	शाश्वता जिन वंदुं तेह ।	ऋषभ चंद्रानन वारिषेण,
४०	ऋषभ चंद्रानन वारिषेण,	वर्धमान नामे गुणसेण ॥१०॥

आद्याक्षर (स, शं, गा, अढी, बा)

४१	वर्धमान नामे गुणसेण ॥	समेतशिखर वंदुं जिन वीश,
४२	समेतशिखर वंदुं जिन वीश,	अष्टापद वंदुं चोवीश ।
४३	अष्टापद वंदुं चोवीश ।	विमलाचल ने गढ गिरनार,
४४	विमलाचल ने गढ गिरनार,	आबु उपर जिनवर जुहार ॥११॥

४५	आबु उपर जिनवर जुहार ॥	शंखेश्वर केसरियो सार,
४६	शंखेश्वर केसरियो सार,	तारंगे श्री अजित जुहार ।
४७	तारंगे श्री अजित जुहार ।	अंतरिक्ष वरकाणो पास,
४८	अंतरिक्ष वरकाणो पास,	जीरावलो ने थंभण-पास ॥१२॥

४९	जीरावलो ने थंभण-पास ॥	गाम नगर पुर पाटण जेह,
५०	गाम नगर पुर पाटण जेह,	जिनवर-चैत्य नमुं गुणगेह ।
५१	जिनवर-चैत्य नमुं गुणगेह ।	विहरमान वंदुं जिन वीश,
५२	विहरमान वंदुं जिन वीश,	सिद्ध अनंत नमुं निशदिश ॥१३॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
५३ सिद्ध अनंत नमुं निशदिश ॥	अढी द्वीपमां जे अणगार,
५४ अढी द्वीपमां जे अणगार,	अढार सहस शीलांगना धार ।
५५ अढार सहस शीलांगना धार ।	पंच महाव्रत समिति सार,
५६ पंच महाव्रत समिति सार,	पाळे पळावे पंचाचार ॥१४॥
५७ पाळे पळावे पंचाचार ॥	बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल,
५८ बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल,	ते मुनि वंदुं गुणमणि-माल ।
५९ ते मुनि वंदुं गुणमणि-माल ।	नित नित ऊठी कीर्ति करुं,
६० नित नित ऊठी कीर्ति करुं,	'जीव' कहे भव-सायर तरुं ॥१५॥

अन्य संकलन

१) वंदित्तु! कंठस्थ कला

२) अजितशांति! कंठस्थ कला

३) अतिचार! कंठस्थ कलाकी लघुपुस्तिका उपलब्ध है।

४) सूत्र कंठस्थ कला भाग-२ (पक्खी प्रति० सूत्रोके लिए)